इकाई २५ दक्षिण एशियाई सुरक्षा

इकाई की रूपरेखा

२५.० उद्देश्य

२५.१ प्रस्तावना

२५.२ दक्षिण एशियाई सुरक्षा

२५.२.१ राजनीतिक गत्यात्मकता और अन्तर-राज्यीय संघर्ष

२५.२.२ भारत-केन्द्रिकता

२५.२.३ असममिति

२५.३ दक्षिण एशिया का नाभिकीकरण

२५.४ ग़ैर-परम्परागत सुरक्षा

२५.४.१ पर्यावरणीय मुद्दे

२५.५ क्षेत्रीय सहयोग के प्रति

२५.६ सारांश

२५.७ कुछ उपयोगी पुस्तकें

२५.८ बोध प्रश्नों के उत्तर

२५.० उद्देश्य

इस इकाई में, दक्षिण एशियाई क्षेत्रा में संघर्ष के स्रोतों पर चर्चा की गई है। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप निम्न लिखित बातें जान पाएँगे:

- दक्षिण एशिया की सुरक्षा गतिशीलता से परिचय;
- संघर्ष के स्रोतों की पहचान;
- दक्षिण एशिया में नाभिकीय घटक के प्रभाव की विस्तृत जानकारी;
- ग़ैर-परम्परागत सुरक्षा की परिभाषा;
- सुरक्षा पर पर्यावरणीय मुद्दों द्वारा अतिक्रमण का विश्लेषण; तथा
- दक्षिण एशिया क्षेत्रा की सुरक्षा की भावी प्रत्याशाओं का विश्लेषण।

२५.१ प्रस्तावना

दक्षिण एशिया तृतीय विश्व का निचोड़ है तथा अर्थशास्त्रा, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय स्तरों एवं विकासोन्मुख घटकों में प्रतिष्ठित भिन्नता वाली सान्निध्य समस्याएँ, परिसम्पत्तियाँ और संस्कृति इसके अधिकार में है। अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों की संकल्पनाओं, विचारधारा एवं दर्शन तथा परिकल्पना में, दक्षिण एशियाई उपमहाद्वीप उन आयामों के साथ अन्तर्क्रिया करता है जो विकसित उत्तर विश्व में सामान्य नहीं है। यह इकाई क्षेत्रा में सुरक्षा गतिविज्ञान पर मात्रा सैनिक परिप्रेक्ष्य में ही नहीं अपितु राजनीतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय सुरक्षा पर भी केन्द्रित है।

पारम्परिक तौर पर, सुरक्षा राज्यों की क्षेत्रीय एकता, राजनीतिक स्वतंत्राता और संप्रभुता के संरक्षण के संदर्भ में संकल्पित है। शीत युद्ध के बाद की अवधि में, यह उत्तरोत्तर महसूस किया जा रहा

है कि सुरक्षा की यह संकल्पना उन मुद्दों पर चर्चा करने में विफल रहती है जो समय के दो प्रमुख सोपानों – बढ़ते हुए भूमण्डलीकरण और त्वरित विघटन से उद्भूत होते हैं। दोनों ऐसी प्रवृत्तियाँ है जिन पर काबू पाने के लिए राष्ट्र-राज्य विशेषतया उपयुक्त नहीं है। यह इस संदर्भ में है कि सुरक्षा निदर्शन को मात्रा राज्य पर ही नहीं अपितु समूहों और उनके हितों पर भी ध्यान केन्द्रित करने के लिए गहनता प्रदान की गई थी। सुरक्षा धारणा को व्यापक बनाया गया जिससे उसमें मात्रा सेना ही नहीं अपितु राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक आयामों को भी शामिल किया जा सके। ये नये आयाम सामान्यत: ग़ैर-परम्परागत प्रतिष्ठानों के रूप में वर्गीकृत किए जाते हैं। इस इकाई का प्रमुख उद्देश्य दक्षिण एशियाई सुरक्षा के गति विज्ञान का विश्लेषण करना है जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ दक्षिण एशियाई सुरक्षा से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर चर्चा शामिल होगी। पहले हम दक्षिण क्षेत्रा के उन व्यापक लक्षणों की जाँच करेंगे जो सुरक्षा को प्रभावित करते हैं तत्पश्चात् सुरक्षा के परम्परागत और ग़ैर परम्परागत आयामों की जाँच के लिए आगे बढ़ेंगे।

२५.२ दक्षिण एशियाई सुरक्षा

भौगोलिक रूप से, दक्षिण एशिया पर्वतों की महान् शृंखला – उत्तर में हिमालय, काराकोरम, हिन्दूकुश तथा दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में हिन्द महासागर से घिरी हुई एक प्राकृतिक रणनीतिक इकाई है। ऐतिहासिक रूप से, आदिकाल से इस क्षेत्रा के लोग जाति, संस्कृति, धर्म और कभी-कभी राजनीतिक निष्ठा द्वारा निकटता से जुड़े हुए हैं।

दक्षिण एशिया में राजनीतिक सीमाएँ स्थिर नहीं हैं। साम्राज्यों का उत्थान और पतन हुआ है। राजनीतिक सत्ता के विभिन्न केन्द्र रहे हैं यद्यपि दिल्ली का साम्राज्यवादी राजधानी होने का सर्वाधिक लम्बा इतिहास है। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश साम्राज्य ने मात्रा दक्षिण एशिया क्षेत्रा पर ही अधिकार नहीं किया अपितु कुछ उन क्षेत्राों पर भी कब्जा किया जो आजकल पश्चिम और दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्राों का अंग हैं। यही वह अवधि थी जब सांस्कृतिक जनसमुदाय के ऊपर राजनीतिक सीमाएँ खींची गई थी। इस क्षेत्रा के सात देशों की क्षेत्राीय सीमाएँ इस प्रकार उपनिवेशी रचनाएँ हैं।

दक्षिण एशिया के पटल पर सर्वाधिक सुस्पष्ट आकृति भारत की है जो क्षेत्रा में एक यथार्थ सत्तापुंज है। आकार, जनसंख्या, प्राकृतिक संसाधन, आर्थिक विकास के स्तर, शिक्षा के मानक, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय प्रगति, सकल राष्ट्रीय उत्पाद और लोकतांत्रिाक राजनीतिक संस्थानों के विकास में, भारत एक प्रासंगिक विशाल देश है।

अत: सापेक्ष अर्थों में, भारत, चीन को छोड़कर, छोटे-छोटे देशों से घिरा हुआ एक विशाल देश है। इसके अतिरिक्त, भूगोल और इतिहास दोनों के परिणामस्वरूप, दक्षिण एशिया का प्रत्येक देश भारत से निकट से जुड़ा हुआ है। वही प्रजातीय और धार्मिक समूह जिनसे उनके लोग संबंद्ध है, भारत में भी पाए जाते हैं जो एक विशाल तथा विषमांगी देश है। सामाजिक संगठन और पर्यावरण प्रबंधन की शैलियाँ प्रत्येक दक्षिण एशियाई देश और भारत में उसके आसन्न हिस्से के बीच एक जैसी हैं; उदाहरणार्थ, नागालैण्ड और उत्तरी बर्मा, पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश, तमिलनाडु और श्रीलंका के मध्य। औपचारिक सीमाओं में वस्तुत: सांस्कृतिक अतिव्याप्ति नहीं है। भारत और इसके सभी दक्षिण एशियाई पड़ोसियों के बीच सीमाओं के पार, वैवाहिक गठबन्धन, पारिवारिक रिश्ते तथा सामाजिक सम्बन्ध हैं। बेहतर हो अथवा बदतर, लोगों, संस्कृतियों और धर्मों का इस प्रकार का पारस्परिक मिश्रण दक्षिण एशिया में अन्तर-राज्यीय संबंधों को एक पारिवारिक गुणवत्ता प्रदान करता है। यह यूरोप सहित अन्य भौगोलिक क्षेत्राों के विपरीत है।

परिवार प्राय: अन्तर्प्रजातीय प्रतिद्वंद्विता और पारिवारिक सदस्यों की पहचान समस्याओं के कारण विघटित हो रहे हैं; ऐसा दक्षिण एशिया में भी है। अपने जटिल कारणों और दु:खद परिणामों वाली अन्तर्प्रजातीय प्रतिद्वंद्विता भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश द्वारा एक-दूसरे के प्रति अपनाई गई कई

सार्वजनिक अवस्थितियों का चरित्रा-चित्राण करती है जिनकी सहभागी राजनीतिक निष्ठा का सर्वाधिक लम्बा इतिहास है। एक बड़ी सीमा तक बांग्लादेश, पाकिस्तान और भारत के संभ्रान्त शासक अन्तर्प्रजातीय प्रतिद्वंद्विता में समरूप है। वे प्रथम ब्रिटिश उपनिवेशवादियों द्वारा तथा तत्पश्चात् साम्राज्यवादी प्रतिस्थानियों, नई महाशक्तियों, द्वारा जरा सी सहानुभूति और मुट्ठीभर मौलिक पुरस्कारों के लिए प्रतिद्वन्द्वी बने जिससे उनके पारस्परिक सम्बन्धों को नुकसान पहुँचा।

विविध प्रजातीय और विविध-धार्मिक समाजों वाले क्षेत्रा में संघर्ष के स्रोत व्यापक तौर पर विविध हैं, उन्हें उपनिवेशी सम्प्रदायों, विशेष रूप से, सामान्य सांस्कृतिक जनसमुदाय एवं आर्थिक क्षेत्रा पर राजनीतिक सीमांकन तथा इन उपनिवेशवाद के अनुवर्त्ती चरण में राजनीतिक गति-विज्ञान तक तलाश किया जा सकता है। क्षेत्रा के दो भू-राजनीतिक लक्षण, भारत केन्द्रिकता तथा राज्यों के बीच सत्ता और संसाधनों की असममिति, क्षेत्रा में सुरक्षा गति-विज्ञान को मूर्त्त रूप देने में अपनी निजी भूमिका निभाते हैं।

२५.२.१ राजनीतिक गत्यात्मकता और अन्तरराज्यीय संघर्ष

दक्षिण एशिया क्षेत्रा में, ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने मात्रा एक एकताकारी बल के रूप में ही कार्य नहीं किया अपितु ऐसे बल के रूप में भी कार्य किया जिसने विसंगति और विभाजन को जन्म दिया। जहाँ इसने दक्षिण एशियाई देशों को एक सामान्य उपनिवेशी व्यवस्था में शामिल किया, वहीं उपनिवेशवाद ने झगड़े के अनेक बीच बो दिए जो आज भी दक्षिण एशिया में अंतर-राज्यीय संबंधों को क्षति पहुँचा रहे हैं। भारत और पाकिस्तान के बीच दो राष्ट्र सिद्धांत पर तथा श्रीलंका और भारत के बीच तमिल बागवानी कर्मचारियों की राष्ट्रीयता को लेकर मतभेद दक्षिण एशियाई राज्यों के बीच विसम्मतियों के मात्रा दो विशिष्ट उदाहरण हैं जिनका मूल ब्रिटिश (कु)शासन की देन है। ब्रिटिश शासन की अन्तिम तीव्रगतिक वापसी तथा क्षेत्रा के दो प्रमुख देशों के संभ्रान्त शासकों के बीच उत्पन्न भावी कडुवाहट ने परम्परागत पूरकता और संसक्ति को बुरी तरह विघटित किया।

उपनिवेशवाद के अनुवर्ती चरण में, क्षेत्रा के देशों में राजनीतिक गत्यात्मकता राष्ट्रवादी बलों के विकास, सामाजिक-सांस्कृतिक ढाँचे और वंशानुगत आर्थिक संरचनाओं में मतभेद के कारण, भिन्न-भिन्न हैं। भारत और श्रीलंका में राजनीति सामान्यत: स्थिर रही और सुगमता से विकास हुआ। क्षेत्रा के दूसरे देश एक लोकतांत्रिक विरूपीकरण और विद्रोह के साक्षी हैं। पाकिस्तान, नेपाल और बांग्लादेश क्रमश: १९५८, १९६० और १९७५ में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के अपक्षरण तथा सत्तावादी सरकारों के कायम होने के साक्षी बने। भूटान में हमेशा राजतंत्रा बना रहा यद्यपि अब वहाँ लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के आरंभ होने के संकेत मिल रहे हैं। १९९०वें दशक के आरंभ में इन सभी देशों में, लोकतांत्रिक विद्रोह हुआ, परन्तु पाकिस्तान और नेपाल में प्रतिगमनकारी बल पुन: सत्तारूढ़ हैं।

जहाँ ऐसा राजनीतिक अपसरण क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करने में बाधाओं के रूप में कार्य करता है, वहीं विगत हाल में, दक्षिण एशियाई देशों में कट्टरपंथी बलों के प्रादुर्भाव से अंतत: राज्य और अन्तर-राज्यीय संबंध दूषित हो रहे हैं। यथार्थत: उन घटकों की पहचान करना मुश्किल है जिनके कारण सत्तावादी और कट्टरपंथी बलों का उद्भव हुआ। परन्तु आपको देखना चाहिए कि सत्तावादी बलों (जैसे पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश और भूटान में) द्वारा वैधता की तलाश तथा लोकतांत्रिक सत्ता (जैसे भारत और श्रीलंका में) के विविध प्रजातीय और विविध धार्मिक समाजों में कट्टरपंथी बलों के उत्थान से अल्पसंख्यकों का बहिष्कार हुआ है जिसके परिणामस्वरूप प्रजातीय और अलगाववादी आन्दोलनों का उद्भव हुआ। श्रीलंका में, १९८०वें दशक के आरंभ से तमिल बगावत जिसने श्रीलंकाई एकता और समेकन को अवरुद्ध किया है, राजनीतिक तंत्रा में सिंहलियों के प्रजातीय समेकन की राजनीति से पैदा हुई। पाकिस्तान में, बांग्लादेश का पृथकीकरण इस्लामी राज्य के शिंकजे में फँसी पंजाबी प्रजातीयता के आधिपत्य का नतीजा था। इसी प्रकर, उत्तर पश्चिमी सीमान्त प्रान्त, बलूचिस्तान और सिन्ध में पदावनति का बोध तथा शिया एवं सुन्नी कट्टरपंथी संघर्ष का उदय अति केन्द्रीकरण और कट्टरपंथ द्वारा प्रभावित अन्यताभाव का परिणाम हैं। बांग्लादेश में, चकमा आन्दोलन बंगाली और इस्लामी दावों की प्रतिक्रिया है। नेपाल में, १९९०वें दशक के अन्त में माओवादी विद्रोह

का तराई आन्दोलन क्रमश: पहाड़ी जनता के आधिपत्य के प्रति और हिन्दू राज्य के प्रति विद्रोह का प्रतीक है। भारत में, पूर्वोत्तर में आन्दोलन और प्रजातीय विप्लव इसके सामाजिक रूप से भिन्न समूहों के समेकन में एक निरपेक्ष राज्य की विफलता का स्पष्ट प्रमाण है।

सुस्पष्टत: राष्ट्र-निर्माण प्रक्रिया इस क्षेत्रा में अभी भी एक अपूर्ण कार्य है। क्षेत्रा के लगभग सभी देश, राजनीतिक विभाजन से आशंकित हैं। क्षेत्रा में प्रजातीय और धार्मिक अतिव्याप्ति के कारण, एक देश में धार्मिक और भाषाई संघर्ष निरपवाद रूप से क्षेत्रा के दूसरे देश पर प्रभाव डालते हैं। आसन्न और मुक्त सीमाओं से सीमाओं के पार लोगों, सामान और विचारों का सुगम प्रवाह होता है जिससे आर्थिक और राजनीतिक रिश्तों में बाधा आती है। अधिकांश आंतरिक सुरक्षा संकट जो दक्षिण एशिया को क्षति पहुँचाते हैं, एक सीमा-पार आयाम से गुजरते हैं और अंतर्संबद्ध है। चाहे यह नेपाल में माओवादी विद्रोह हो, श्रीलंका में, चिरस्थायी प्रजातीय समस्या हो, इस्लामी अतिवादियों द्वारा बांग्लादेशी क्षेत्रा के उपयोग में वृद्धि हो, लघु अस्त्राों का फैलाव हो, अथवा नशीली दवाओं के अवैध व्यापार की आशंका हो तथा नार्को-आतंकवाद हो, प्रत्येक स्थिति में महत्त्वपूर्ण सीमा पार के राष्ट्रीय आयाम मौजूद हैं। क्षेत्रा में राज्य प्राय: एक-दूसरे पर परोक्ष रूप से अथवा प्रत्यक्ष रूप से अलगाववादी तथा विद्रोही आन्दोलनों का समर्थन करने का आरोप लगाते हैं।

२५.२.२ भारत-केन्द्रिकता

यद्यपि किसी भी दक्षिण एशियाई देश की सीमाएँ एक-दूसरे के साथ सहभाजित नहीं हैं, भले ही भारत से जुड़ी हैं अथवा गुजरती हैं, भौगोलिक रूप से यह क्षेत्रा स्वरूप में भारत-केन्द्रिक है। इसका एक परिणाम यह है कि भारत की अन्त:क्षेत्राीय अन्तर्क्रियाएँ सहज रूप से द्विपक्षीय हैं। भारत अपने पड़ोसियों के साथ-अन्तर्क्रियाओं से बच नहीं सकता, जबकि इसके किसी भी पड़ोसी के लिए भारत के अलावा अन्य दक्षिण एशियाई देश के साथ अन्तर्क्रिया करने की वैसी बाध्यता नहीं है। अत: यह आश्चर्यजनक नहीं है कि क्षेत्रा की अन्तरराज्यीय समस्याओं में भारत प्रमुखता से उभरता है।

२५.२.३ असममिति

आकार, जनसंख्या, ऊर्जा और संसाधनों में भारत और दक्षिण एशिया के शेष देशों के बीच असममिति क्षेत्रा का एक अन्य लक्षण है जो क्षेत्रा में अन्तरराज्यीय संबंधों पर प्रभाव डालता है। क्षेत्रा में भारत के वर्चस्व का अपने छोटे पड़ोसियों पर भयकारी प्रभाव रहा है। भारत के पड़ोसी भारत को प्राय: बड़े भाई के रूप में मानते हैं और उससे क्षेत्रा में अपने भौतिक वर्चस्व को राजनीतिक और आर्थिक वर्चस्व में रूपान्तर की माँग करते हैं। उन्होंने भारतीय कार्यवाहियों के उद्देश्यों पर अक्सर चिन्ता व्यक्त की है। यद्यपि भारतीय फौज ने श्रीलंका में (१९७१ एवं पुन: १९८७-८९ में), बांग्लादेश में (१९७१ में) और मालदीव में (१९८९ में) हस्तक्षेप किया था तथा अपना मिशन पूरा होने के बाद वापस आ गई थी। ये हस्तक्षेप पड़ोसी देशों द्वारा हितकर माने गए थे और अन्य अवसरों पर शत्राुतापूर्ण करार दिए गए। 'शत्राुतापूर्ण हस्तक्षेपों' ने भारतीय वर्चस्व को प्रेत की संज्ञा दी है परन्तु 'हितकर हस्तक्षेपों' का शासन सुरक्षा का सहायक होने के कारण स्वागत किया गया है। एक बार भारत, अपनी तरफ से, पड़ोसियों द्वारा ऋणग्रस्त बनाए जाने के लिए उनकी संभव गुटबंदी से चिन्तित था कि कहीं वे उसकी क्षेत्राीय उत्कृष्टता को दुर्बल न कर दें। क्षेत्रा में असममिति से उद्भूत इस प्रकार के संदेह और आशंकाएँ भी क्षेत्राीय सहयोग को मजबूत करने में बाधा बनकर रही हैं। क्षेत्रा के छोटे देशों को आशंका रहती है कि द्विपक्षीय एवं क्षेत्राीय दोनों आर्थिक विनियोजनों में, भारत की विशाल और मजबूत अर्थव्यवस्था को उनकी कीमत पर अधिक लाभ मिलेगा।

इस क्षेत्रा में भारत के वर्चस्व और केन्द्रीयता का महत्त्वपूर्ण परिणाम सामरिक लक्ष्यों की प्राप्ति के अनुसरण में मतभेद होता है। जहाँ भारत अपनी सुरक्षा के बारे में उप-महाद्वीपीय पहुँच रखता है वहीं उसके पड़ोसी अपेक्षाकृत अधिक सीमित नजरिए अपनाते हैं जो उनके दक्षिण एशिया क्षेत्रा के सदस्यों के रूप में अवबोधन की बजाए उनके स्थानीय विचारों से प्रभावित होते हैं। भारतीय सुरक्षा चिन्तन मात्रा क्षेत्रा में संघर्षों तक ही सीमित नहीं अपितु मध्य एशिया, हिन्द महासागर में घटनाओं और बदलते हुए विश्व पर्यावरण से जुड़ा हुआ है। भारत ने अपनी गुट निरपेक्ष नीति के अनुरूप स्वतंत्रा

भूमिका निभाने, शीत युद्ध गठजोड़ों में शामिल न होने तथा इस क्षेत्रा में बाहरी शक्तियों की भूमिका न्यूनतम करने की माँग की है। दूसरी तरफ, इसके पड़ोसियों ने अतिरिक्त क्षेत्राीय शक्तियों का प्रादुर्भाव करके भारत के क्षेत्राीय वर्चस्व के प्रति संतुलन की माँग की है। भारत अपने पड़ोसियों के सुरक्षा चिन्तन में प्रमुख रूप से उभरता है। भारत के साथ संघर्ष ने पाकिस्तान में सुरक्षा बहस को पूरी तरह निर्देशित किया है। श्रीलंका में सुरक्षा बहस उसकी तमिल समस्या और उत्तर में भारतीय मौजूदगी से निर्धारित की गई है। नेपाल में सुरक्षा चिन्तन उसकी दक्षिणी और उत्तरी सीमाओं पर भारत और चीन का संतुलन बनाने के उसके प्रयासों तथा उसके और भारत के बीच सभ्यतामूलक समानताओं से उसकी पहचान को निरन्तर खतरे के आस-पास केन्द्रित रहता है।

भारत को अधिकाधिक निरुत्साहित करने के लिए, बाहरी शक्तियों ने इस क्षेत्रा में और इसके चहुँगिर्द अपने विशिष्ट हितों को प्रोन्नत करने के लिए क्षेत्राीय रणनीतिक विसंवादिता का अक्सर अनुचित लाभ उठाया है। जहाँ संयुक्त राज्य ने १९५०वें दशक के आरंभ से भारत-पाक मतभेदों का लाभ उठाया है, वहीं चीन ने १९६२ में पर्वतीय राजधानी में राजा महेन्द्र द्वारा लोकतंत्रा की बर्खास्तगी के परिणामस्वरूप उत्पन्न भारत-नेपाल तनाव का लाभ उठाया। शीतयुद्ध के बाद की अवधि में विभिन्न प्रकार के विवादपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय रणनीतिक हितों के बेतरतीब प्रादुर्भाव से क्षेत्राीय तनावों को बढ़ावा मिला। संयुक्त राज्य में ११ सितम्बर को आतंकवादी हमले से, अन्तरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान इस क्षेत्रा और अफगानिस्तान की ओर चला गया है। संयुक्त राज्य ने अन्तरराष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध अपने अभियान में पाकिस्तान को एक सहयोगी के रूप में नियुक्त किया। ओसामा बिन लादेन को पकड़ने और उसके अलकायदा नेटवर्क को ध्वस्त करने के लिए संयुक्त राज्य के प्रयासों में पाकिस्तान के 'एक फ्रण्टलाइन राज्य' के रूप में प्रादुर्भाव के बावजूद, पाकिस्तानी राज्य, अपनी बाह्य खुफिया एजेंसी, द इण्टर सर्विसेज इण्टेलीजेंस (ISI) के माध्यम से जम्मू एवं कश्मीर राज्य और भारत के अन्य हिस्सों में सक्रिय आतंकवादी संगठनों को सहायना करने की अपनी नीति पर कार्य करता रहा।

उन घटकों में जिन्होंने १९८०वें दशक से दक्षिण एशिया में सुरक्षा संबंधों को मूर्त्त रूप दिया, एक मुद्दा नाभिकीय मुद्दा है। क्षेत्रा की सुरक्षा गत्यात्मकता में नाभिकीय घटक १९८०वें दशक में परोक्ष रूप से तथा १९९०वें दशक के अन्त में प्रत्यक्ष रूप से उद्भूत हुआ।

२५.३ दक्षिण एशिया का नाभिकीकरण

भारत पाकिस्तान संबंध आरंभ से ही मैत्रीपूर्ण नहीं रहे हैं क्योंकि वे विभाजन, संदेह, आशंका और असुरक्षा के इतिहास में उद्भूत हुए। वे अभी भी तनावपूर्ण हैं क्योंकि दोनों के बीच प्रमुख समस्याएँ – कश्मीर समस्या, कश्मीर में आतंकवाद को प्रोत्साहित करने में पाकिस्तान की अन्तर्ग्रस्तता, सियाचीन हिमखण्ड आदि सभी समाधान रहित हैं।

यह इस संदर्भ में है कि नाभिकीय मुद्दे ने दक्षिण एशियाई सुरक्षा का अतिक्रमण करना आरंभ किया। जहाँ भारत ने १९७०वें दशक के मध्य के प्रारंभ में, जब इसने शान्तिपूर्ण परमाणु विस्फोट किया, नाभिकीय क्षमता का प्रदर्शन किया, इसने नाभिकीय संदिग्धता को बनाए रखने को प्राथमिकता दी। सर्वाधिक अनुमानों के अनुसार, पाकिस्तान ने नाभिकीय क्षमताएँ १९८०वें दशक के बाद के अर्धांश में चीन की सहायता से प्राप्त कीं। भारत और पाकिस्तान दोनों ने क्रमश: पोखरन और चगाई में शृंखलाबद्ध परीक्षण करके मई १९९८ में अपनी नाभिकीय संदिग्धता की समाप्ति की।

भारत और पाकिस्तान के नाभिकीय कार्यक्रमों के सुव्यवस्थित निवारण अलग-अलग रहे हैं। भारत ने चीन से सुरक्षा को खतरे तथा पाँच महाशक्तियों के नाभिकीय एकाधिकार की ओर इशारा किया वहीं पाकिस्तान ने स्वयं भारत पर उँगली उठाई। तथापि, दोनों के बीच सहभाजित अवबोधन से नए नाभिकीय अस्त्रा सम्पन्न राज्यों का मानना है कि नाभिकीय अस्त्राों से राष्ट्रीय सुरक्षा अभिनिश्चित होगी और द्विपक्षीय संबंधों में स्थिरता आएगी।

नाभिकीकरण का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रभाव क्षेत्राीय शान्ति और स्थिरता के क्षेत्रा में महसूस किया गया है। दो देशों के बीच घनिष्ठता जो उन घटनाओं से स्पष्ट थीं जिनके अनुक्रम में परीक्षण किए गए – १०वाँ दक्षेश शिखर सम्मेलन, दो देशों के बीच बस संचालन की नीति तथा लाहौर उद्घोषणा – ने आभास करा दिया कि दो नए अस्त्रा सम्पन्न राष्ट्रों के बीच पारस्परिक निवारण कायम हो चुका है। तथापि, यह घनिष्ठता सीमित युद्ध, कारगिल संघर्ष तथा जनरल परवेज मुशर्रफ द्वारा पाकिस्तान में सैनिक सत्तारोहण से चूर-चूर हो गई। पाकिस्तान ने भी राष्ट्रनीति के विलेख के रूप में इस्लामी अतिवादिता का प्रयोग करने की अपनी रणनीति में कोई परिवर्तन नहीं किया। भारतीय जम्मू एवं कश्मीर राज्य इस रणनीति और पाकिस्तान आधारित इस्लामी आतंकवादी गुटों की कार्यवाहियों का प्रथम लक्ष्य बना रहा। कारगिल संघर्ष ने स्पष्ट तौर पर निवारण की विफलता सूचित की। इस प्रकार, जहाँ नाभिकीय अस्त्राों के होने से विशाल पैमाने पर परम्परागत युद्धों की सम्भावनाओं में कमी प्रतीत होती है, वहीं 'अमान्य', 'अनियमित' अथवा कम तीव्रता वाले शृंखलाबद्ध युद्ध, भारत और पाकिस्तान के बीच भिड़न्त सर्वाधिक प्रचलित प्रकटीकरण है। दक्षिण एशिया सर्वाधिक खतरनाक क्षेत्रा, नाभिकीय युद्ध के कगार पर खड़ा क्षेत्रा, बना हुआ है क्योंकि एक सीमित युद्ध एक नाभिकीय संघर्ष में परिणित हो सकता है अथवा आतंकवादी क्रियाकलाप शृंखलाबद्ध कार्यवाहियाँ करके नाभिकीय अस्त्राों का प्रयोग करा सकते हैं।

दक्षिण एशिया में स्थिरता को प्रभावित करने वाले घटक

राजनीतिक सीमा पर, भारत में नेताओं के ऊपर निर्णय करते समय संस्थागत प्रतिबन्ध हैं, यद्यपि संकटकालीन क्षणों में, इन्हें एक तरफ कर दिया गया जैसा है कि १९८७ में ऑपरेशन ब्रास की स्थिति में हुआ। पाकिस्तान में, प्रतिबन्धों का कोई अस्तित्व नहीं है क्योंकि यहाँ पर हमेशा सशस्त्रा बलों का आधिपत्य रहा है जिन्होंने क्षेत्रा में शांति और सुरक्षा मुद्दों का निर्णय किया है। दोनों तरफ का कभी-कभी होने वाला जनजातीय संघर्ष गंभीर हादसे में बदल सकता है। जोखिम उठाने की स्थिति में, यह स्पष्ट है कि दक्षिण एशियाई नेता अत्यंत सावधानी और अत्यंत ग़ैर-उत्तरदायी दाव-पेंचों के बीच दोलायमान हैं।

तकनीकी रूप से, भारत और पाकिस्तान, दोनों के पास नाभिकीय प्रक्षेपास्त्राों को बड़े शहरों पर छोड़े जाने की क्षमता है जिन्हें मिसाइल द्वारा अन्तर्रोधन की दुर्लभ संभावना है। मिसाइलें उड़ान-काल में मात्रा तीन मिनट कम करती हैं जो निरोधक कार्रवाई के लिए नगण्य है तथा भूतपूर्व जलसेना अध्यक्ष एन. एन. दास के अनुसार, तत्काल प्रतिकार के प्रवर्त्तन के लिए बाध्य हो जाती है जिसके विनाशकारी परिणाम होते हैं। शीत युद्ध में किसी भी स्थिति में पिछड़ा समय (Lag Time) ३० मिनट से कम नहीं था। तथापि, पूर्वी और पश्चिमी खंड के देशों के बीच बीसियों अग्रिम-चेतावनी तंत्रा, टेलीफोन सेवाएँ, अनुक्षेप सक्रिय तालमेल, और संकट निवारण यंत्रा थे। भारत और पाकिस्तान में कोई भी ऐसा नहीं है। अत: इस क्षेत्रा में नाभिकीय मुद्दे अतिआवश्यक बोध के साथ निपटाने की आवश्यकता है।

अन्ततः, दक्षिण एशिया में, एक संरचनात्मक असममिति है और क्षेत्रा को विगत की अपेक्षा भविष्य में कम स्थिर करने में मुकाबले पर है। चीन दक्षिण एशिया सुरक्षा मुद्दों में विशेष रूप से भारत-पाक नाभिकीय प्रसारण और क्षेत्रीय अस्त्रा नियन्त्राण के संदर्भ में एक प्रचंड कार्ड है। भले ही चीन भारत के लिए प्रत्यक्ष ख़तरा नहीं है, पाकिस्तान के साथ चीन के सम्बन्धों के परिणामस्वरूप उपमहाद्वीप में चीन की नाभिकीय मौजूदगी में पर्याप्त बल है। भारत-चीन रिश्तों में परिवर्तन के बावजूद, चीन औसतन और दीर्घकालीन अर्थों में भारत के लिए प्रथम सुरक्षा चुनौती है और इसके बने रहने की संभावना है।

दक्षिण एशिया में स्थिरता के लिए संभावनाएँ

परमाणुकृत दक्षिण एशिया एक वास्तविकता है क्योंकि न तो भारत और न ही पाकिस्तान एकपक्षीय अथवा द्विपक्षीय तौर पर परमाणु अस्त्राों को छोड़ने के लिए प्रवृत्त होंगे। परमाणु अस्त्राों को छोड़ने

के लिए उनका प्रेरित करने वाला एक बहुपक्षीय समागम अभी वार्त्ताधीन है और निकट भविष्य में इसके वास्तविकता में परिवर्तन की संभावना नहीं है। दोनों देशों द्वारा यह भी जान लिया गया है कि एक युद्ध, परम्परागत अथवा नाभिकीय, राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य बल के तौर पर किसी पक्ष के लिए लाभकारी नहीं हो सकता। फिर भी यह अभिकल्पना है कि दक्षिण एशिया एक संकटग्रस्त क्षेत्रा है जहाँ स्थिरता की परत पतली है यद्यपि ऐसी स्थिति को ऐसे शृंखलाबद्ध उपायों के द्वारा स्थायित्व प्रदान करने की आवश्यकता है जिन्हें एक सहकारी फ्रेमवर्क के तहत प्रणाली रूप से सर्वाधिक लागू किया जा सके। इस संदर्भ में, दक्षिण एशिया में सहकारी सुरक्षा अधिक सुसंगत तथा प्रतिस्पर्धात्मक सुरक्षा का सजीव विकल्प बन जाती है। सहकारी सुरक्षा अन्तर-राज्यीय रिश्तों का निर्धारण करती है जहाँ सहमति प्राप्त मानदण्डों और प्रतिष्ठापित क्रियाविधियों के भीतर किसी प्रकार की हिंसा के बिना विवाद उठाए जा सकते हैं। इसके लिए सैन्य अन्तर्ग्रस्तता के द्वारा भिड़न्त करने की बजाए सहयोग और पारस्परिक स्वीकृत आधार के माध्यम से रिश्तों को बनाये जाने की आवश्यकता है। विश्वास निर्माण उपाय (CBM's) और विश्वस्त सुरक्षा निर्माण उपाय (CSBM's) सहकारी सुरक्षा कायम रखने के औजार हैं। नाभिकीय जोखिम को कम करने के उपायों की इस दिशा में शुरुआत द्विपक्षीय शृंखलाबद्ध करारों के माध्यम कर दी गई है जिनमें से एक करार नई दिल्ली में २८ जून २००४ को सम्पन्न हुआ। यह करार इस्लामाबाद और नई दिल्ली के बीच विभिन्न नीति निर्माण स्तरों पर हॉटलाइन स्थापना निर्धारित करता है।

बोध प्रश्न १

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर इकाई-अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाएँ।

१) दक्षिण एशिया में सत्ता और संसाधनों की असममिति किन तरीकों से क्षेत्रा की सुरक्षा गत्यात्मकता को प्रभावित करती है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

२) कट्टरपंथी बलों के उदय से दक्षिण एशिया क्षेत्रा में सुरक्षा किस प्रकार प्रभावित होती है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

३) दक्षिण एशियाई क्षेत्रा को परमाणु युद्ध के कगार पर खड़ा क्षेत्रा क्यों कहा गया है?

.....

.....

२५.४ ग़ैर-परम्परागत सुरक्षा

विगत दशक में अथवा उसके बाद, अनेक स्नातक और सुरक्षा विश्लेषकों ने महसूस किया है कि सुरक्षा की परंपरागत धारणा दक्षिण एशिया की जनता के उस महत्त्वपूर्ण अनुपात को अर्थपूर्ण सुरक्षा मुहैया कराने में विफल रही है जो विश्व की कुल आबादी के पाँचवें हिस्से से अधिक है। वे बताते हैं कि क्षेत्रा में अधिकांश लोगों के लिए, सुरक्षा को महानतम् ख़तरा ग़रीबी, बीमारी, पर्यावरणीय प्रंदूषण, अपराध, और असंगठित हिंसा से है – कई लोगों के लिए अभी भी बड़ा ख़तरा किसी 'बाहरी' संकट की अपेक्षा, स्वयं उनके निजी राज्य से पैदा हो सकता है। वे सुरक्षा की धारणा को अधिक गहन बनाने पर जोर देते हैं जिससे उसमें मात्रा राज्य के ख़तरों को ही नहीं अपितु मानवीय सुरक्षा अर्थात् समाज में व्यष्टियों और समूहों की सुरक्षा के ख़तरों को भी शामिल किया जाए। कुल मिलाकर, राज्य का मौलिक प्रयोजन मात्रा सुरक्षा का संरक्षण करना हीं नही है अपितु अपने नागरिकों के हितों को बढ़ावा देना भी है। ये स्नातक मात्रा ''बाहरी'' अथवा सैन्य ख़तरों को ही नहीं अपितु राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय स्त्रोतों से उद्भूत होने वाले असैन्य ख़तरों को भी सुरक्षा की धारणा में शामिल करने के लिए उसे और अधिक व्यापक बनाए जाने का भी आग्रह करते हैं। वे इसमें शामिल करते हैं: जनसंख्या की सीमा-पारीय हलचल, प्रजातीय-राजनीतिक, सामाजिक-व-आर्थिक, तथा साम्प्रदायिक-धार्मिक राजनीति; धन-आहूत कार्यों के साथ अपने बीजीय गठजोड़ों से आतंकवाद और हथियारों की तस्करी; वन अपरोपण तथा मरुस्थलीकरण की इससे जुड़ी हुई समस्याओं को जन्म देने वाला पर्यावरणीय अपक्षीणन; आन्तरिक प्रवास; अव्यवस्थित शहरीकरण आदि।

यह अभी हाल में ही हुआ है कि सुरक्षा अध्ययनों में बाहरी ख़तरे की समस्याओं तथा मानवीय और ग़ैर-परम्परागत सुरक्षा चिन्तनों को साथ-साथ जकड़ में लेना आरंभ कर दिया गया है। तदनुसार, बाहरी ख़तरे, आन्तरिक सामाजिक संसक्ति, शासन क्षमता, विफल राज्य, आर्थिक विकास, संरचनात्मक समायोजन, लिंग सम्बन्ध, प्रजातीय पहचान की समस्याएँ और संक्राम्य तथा भूमंडलीय समस्याएँ जैसे एड्स (AIDS), नशीली दवाओं का अवैध व्यापार, आतंकवाद तथा पर्यावरणीय अपक्षीणन सुरक्षा अध्ययनों में चिन्तन के क्षेत्रा हैं।

सुरक्षा की धारणा को व्यापक बनाने में एक ख़तरा उन कठिनाइयों से है जो मानवीय सुरक्षा तथा कल्याणकारी और शासन के मुद्दों को शामिल करने के लिए व्यापक रूप से संकल्पित ग़ैर-परम्परागत सुरक्षा के बीच रेखा खींचने में सामने आएँगी। ग़ैर परम्परागत सुरक्षा में स्वास्थ्य, कल्याण और विकास की चुनौतियाँ शामिल नहीं है। परन्तु ये मुद्दे उस समय सुरक्षा चिन्तन बन जाते हैं जब कोई संकटकालीन स्थिति आती है, जब वे समाज के नागरिकों के महत्वपूर्ण अनुपात में जीविका अवसरों की अनदेखी करते हैं अथवा उन्हें कम करते हैं तथा जब वे समाज की स्थिरता और एकता के लिए ख़तरा बन जाते हैं।

स्त्राी संबंधी ग़ैर-परम्परागत ख़तरों की जाँच करना इस इकाई के दायरे में नहीं है। हम पर्यावरणीय मुद्दों पर चर्चा करेंगे। अन्य ग़ैर-परम्परागत सुरक्षा ख़तरों की तरह, इनके राज्य सुरक्षा (असैन्य) और व्यष्टियों तथा समूहों की सुरक्षा (मानवीय सुरक्षा) के साथ जटिल गठबंधन होते हैं।

२५.४.१ पर्यावरणीय मुद्दे

क्षेत्रीय, असैन्य तथा मानवीय सुरक्षा के लिए पर्यावरण के कई गुने निहितार्थ हैं। इससे संभाव्य तौर पर प्रदूषण के प्रभावों के बिखराव और दुर्लभ संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा के परिणामस्वरूप समुदायों और राज्यों के बीच संघर्ष भी हो सकते हैं

पर्यावरणीय अपक्षीणन संघर्ष की संभावनाओं में वृद्धि से राष्ट्रीय सुरक्षा को ख़तरा प्रस्तुत करता है। पर्यावरणीय मुद्दों की उस समय अन्तरराष्ट्रीय अथवा क्षेत्रीय सुरक्षा को ख़तरों के रूप में पहचान की जाती है जब वे सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिक स्वास्थ्य तथा पड़ोसी देशों की समृद्धि को कम आँकते हैं। पर्यावरणीय तनाव ऐसी स्थिति को जन्म देता है जहाँ राजनीतिक प्रक्रियाएँ इसके प्रभावों पर काबू पाने में विफल रहती हैं जिसके परिणामस्वरूप राजनीतिक उत्क्षेपण तथा सैन्य हिंसा की संभावना रहती है।

पर्यावरणीय अपक्षीणन में मानवीय सुरक्षा भी निहितार्थ हैं। यह प्रदूषण, अस्वस्थता और प्राकृतिक संकटों के प्रति सुभेद्यता के प्रभावों के माध्यम से व्यष्टियों को प्रत्यक्ष ख़तरा प्रस्तुत कर सकता है। यह समुदायों को उत्पादक समुदायों के रूप में कार्य करने की उनकी क्षमता अथवा लोक सेवा मुहैया कराने के लिए उनकी क्षमता को कम आँक कर – संसक्ति और स्थिरता के ख़तरे को अभिव्यक्त कर सकता है।

गरीबी, अन्याय, पर्यावरणीय अपक्षीणन और संघर्ष जटिल और शाक्तिशाली तरीकों से अन्तर्क्रिया करते हैं। जलवायु परिवर्तन, मरुस्थलीकरण के कारण आबादी वाले इलाकों का सीमान्तीकरण, वन-अपरोपण, अथवा बांग्लादेश में शरणार्थियों के रूप में लोगों का विस्थापन, नेपाल में वन-अपरोपण के परिणामस्वरूप भारत में जनसंख्या का भारी संख्या में पलायन मानवीय सुरक्षा मुद्दों का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

दक्षिण एशियाई देशों की समस्याएँ सामाजिक विप्लव और राजनीतिक अस्थिरता में परिणीत होने वाले शिक्षित बेरोज़गार युवकों के साथ जनसंख्या, गरीबी में हो रही वृद्धि के कारण पर्यावरणीय संसाधन के अनुचित लाभ का एक बीभत्स दृश्य प्रस्तुत करती हैं। जहाँ वृद्धि और विकास के लिए महान् प्रयास किए जा रहे हैं वहीं अर्थव्यवस्था में प्रतिकूल प्रवृत्तियाँ, अपर्याप्त विकास नीतियाँ, विविध-जातीय और विविध-प्रजातीय समाजों में असमानताएँ पर्यावरण विकास, सुरक्षा और संघर्ष के बीच संबंधों को जटिल बनाती है जिससे क्षेत्रा और अधिक जटिल तथा असुरक्षित हो जाता है।

पर्यावरणीय संघर्ष प्राय: राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक अथवा क्षेत्रीय संघर्षों अथवा संसाधनों या राष्ट्रीय हितों के ऊपर संघर्षों, अथवा किसी अन्य प्रकार के संघर्ष के रूप में स्वयमेव प्रकट होते हैं। ये पर्यावरणीय अपक्षीणन द्वारा प्रेरित परम्परागत संघर्ष हैं। पर्यावरणीय संघर्षों का चरित्रा चित्राण निम्नलिखित क्षेत्रों में से एक अथवा एकाधिक क्षेत्रों में अपक्षीणन के प्रमुख महत्त्व द्वारा किया जाता है: नवीकरणीय संसाधनों का अधिक प्रयोग; पर्यावरण की निमज्जन क्षमता (प्रदूषण) की अतिश्रांति; अथवा निवासस्थल की कमी।

आज दक्षिण एशिया के सम्मुख चुनौतियाँ क्षेत्रा के सीमित संसाधनों के साथ विशाल जनसांख्यिकीय स्रोत का समाधान कर रही हैं। संघर्ष की संभावना अत्यधिक बनी रहती हैं क्योंकि राज्य की अपनी मौजूद जनसंख्या के भरण-पोषण की क्षमता संसाधनों की दुर्लभता के कारण कम होती जा रही है। आज तक बदतम संघर्ष भूमि संसाधन के ऊपर लड़े गए हैं। अन्तिम पाँच दशकों में क्षेत्रा में तीन युद्ध लड़े जा चुके हैं तथा क्षेत्रीय मुद्दे जैसे कश्मीर, सियाचीन पर दावों का अभी तक समाधान नहीं हुआ है।

जल क्षेत्रीय झगड़े का प्रमुख स्रोत है। क्षेत्रा की भौगोलिक सामीप्यता के कारण सभी प्रमुख नदियाँ जो सर्वाधिक आबादी वाले क्षेत्रा का अंग हैं, दक्षिण एशिया के उत्तरी भाग में हैं तथा एक से अधिक देशों के क्षेत्रों से होकर प्रवाहित होती हैं और इस प्रकार यहाँ जल विभाजन के ऊपर पुनरावर्त्ती मतभेद उभरते रहते हैं। सिन्धु बेसिन, द फरक्का बैरेज मतभेद के चिरस्थायी स्रोत थे। इसी प्रकार

बाढ़ों का बार-बार आना भी भारत और बांग्लादेश के बीच एक प्रमुख समस्या है। प्रदूषण में भी संघर्ष के बीज हैं। नदियों, अन्तरदेशीय जल निकायों और समुद्रों का प्रदूषण बढ़ रहा है। प्रदूषण से अनुसंसिक सामाजिक समस्याएँ जैसे राष्ट्रीय सीमाओं के पार प्रवास के खाद्य उत्पादन और मानवीय स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाना हो सकती हैं जिनके परिणामस्वरूप दुर्लभता आ जाती है और संघर्ष को बढ़ावा मिलता है। इसी प्रकार बढ़ती जा रही दक्षिण एशियाई खाद्य अपेक्षाओं के कारण सीमित खाद्य उपलब्धता तथा अकालस्थिति हो सकती है जो बदले में राजनीतिक अस्थिरता पैदा कर सकती हैं और प्रत्यक्षत: इन स्थानीय घटनाओं के क्षेत्रीय निहितार्थ भी हैं।

इस प्रकार क्षेत्रीय स्तरों पर दक्षिण एशियाई राष्ट्रों को पारिस्थितिकीय क्षति की प्रक्रियाओं पर काबू पाने तथा शान्ति, सुरक्षा को संरक्षित करने तथा पर्यावरणीय संसाधनों के अनुरूप दक्षिण एशिया के संभाव्य मानव संसाधन का विकास करने की आवश्यकता है।

२५.५ क्षेत्रीय सहयोग के प्रति

दक्षिण एशिया के भीतर बहुपार्श्वीय आधार पर सहयोग के मार्ग तलाश करने के प्रयास और दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संघ (दक्षेस) में इन प्रारंभिक प्रयासों का संस्थानीयकरण भारतीय उपमहाद्वीप में राजनीतिक रूप से संभ्रान्त लोगों और नीति-निर्माताओं के बीच अन्तर्जनित इस भावना का प्रकटीकरण है कि वहाँ अन्तर्निहित भौगोलिक सांस्कृतिक एकता तथा समान जलवायु स्थितियाँ और आर्थिक परिपूरक हैं जिन्हें संस्थानीय अभिव्यक्ति की आवश्यकता है।

दिसम्बर १९८५ में दक्षेस का गठन सात सदस्य राष्ट्रों की मैत्री, विश्वास और पारस्परिक बोध की भावना में उनकी आम समस्याओं का समाधान तलाश करने के प्रति क्षेत्रीय तौर पर साथ-साथ कार्य करने के लिए सहयेाग के अवनिर्धारित प्रयास का मूर्त्त प्रकटीकरण रहा है। पारस्परिक सम्मान, न्यायसंगतता, सहभाजित लाभों के आधार पर व्यवस्था करने के उद्देश्य से अपनी जनता के कल्याण और समृद्धि को प्रोन्नत करने में सहायता मिलेगी तथा इससे जीवन की उनकी गुणवत्ता में सुधार होगा।

चूँकि राष्ट्र-राज्य स्वयमेव क्षेत्रा में अपना अस्तित्व बनाए रखने की प्रक्रिया में हैं, महा-राष्ट्रीय क्षेत्रा की संकल्पना उत्कृष्ट तथा राष्ट्र-निर्माण के तत्काल कार्य के प्रतिकूल प्रतीत होती है। राष्ट्र-राज्य निरपेक्षता मध्य में है तथा दक्षिण एशिया में किसी भी परियोजना के लिए निर्णायक हैं। यदि क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग आगे बढ़ने में विफल रहता है तो यह इसीलिए है क्योंकि अधिकांश राष्ट्र-राज्य स्वयमेव प्रमुख विफलताएँ हैं।

दक्षेस की सफलता अन्तत: उद्यम द्वारा उत्पन्न साख तथा राजनीतिक मतभेदों के समाधान का लाभ उठाने के लिए सदस्य राज्यों की बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता पर निर्भर करेगी। उभरती हुई विश्व व्यवस्था की बाध्यता के साथ-साथ क्षेत्रा में लोकतंत्रीकरण की गति में तीव्रता लाने से यात्राा इस उद्देश्य को प्राप्त करने के प्रति आरंभ होती है। ''संयुक्त रहेंगे खड़े रहेंगे, विभाजित होंगे, गिर जाएँगे''। सार रूप में यह दक्षेस के समक्ष चुनौती है।

बोध प्रश्न २

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर इकाई-अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाएँ।

१) ग़ैर-परम्परागत सुरक्षा परिप्रेक्ष्य से, विकास की चुनौतियाँ कब सुरक्षा ख़तरे में बदल जाती हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

२) ग़ैर-परम्परागत और मानवीय सुरक्षा ख़तरा पर्यावरणीय अपक्षीणन किस प्रकार है?

.....

.....

.....

.....

.....

२५.६ सारांश

दक्षिण एशिया अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है जैसे परम्परागत समस्याएँ जो क्षेत्रा में सदस्य राष्ट्रों की सामीप्यता से उद्‌भूत होती हैं, क्षेत्रा में भारत का वर्चस्व और उसकी केन्द्रिकता तथा राज्यों में राजनीतिक गत्यात्मकता। क्षेत्रा के दो महत्त्वपूर्ण और प्रतिद्वंद्वी सदस्यों नामत: भारत और पाकिस्तान, के परमाणु सम्पन्न होने से क्षेत्रा आज नाभिकीय संघर्ष के प्रमुख कगार पर है।

दक्षेस, जो क्षेत्रा में क्षेत्रीय सहयोग का प्रथम प्रकटीकरण है, पारस्परिक अविश्वास की बेड़ियों को काटने तथा क्षेत्रा के देशों के बीच सहयोग को मजबूत करने के लिए प्रयास कर रहा है। तथापि, राजनीतिक समस्या प्रमुख अड़चन सिद्ध हो रही है। जैसा कि हमने देखा है, राजनीतिक समस्या की अपनी जड़ें दक्षिण एशियाई राष्ट्र-राज्य में हैं। समान सांस्कृतिक जनसमुदाय और आर्थिक स्थल पर राजनीतिक मानचित्रा खींचने से मात्रा अन्तर-राज्यीय संघर्ष ही नहीं हुए अपितु इससे क्षेत्रीय रिश्तों का आधार समाप्त हुआ है। राष्ट्र-राज्यों में विभाजन प्रबल है।

कुछ टीकाकारों ने तर्क दिया है कि सुरक्षा की नई संकल्पना को परिभाषित करना उपयुक्त रहेगा जिससे वह मात्रा सैन्य सुरक्षा को ही शामिल न करे अपितु उसमें अधिक व्यापक मुद्दे जैसे गरीबी उन्मूलन, पर्यावरणीय संरक्षण, ऊर्जा और खाद्य सुरक्षा भी शामिल हों। यह तर्क दिया गया है कि इस प्रकार का अभिगम : (क) राज्य-केन्द्रिक सुरक्षा संदर्श से व्यष्टि सुरक्षा की ओर उन्मुख होने में योगदान देगा, और (ख) "आम शत्रु" के मुद्दे को संयुक्त रूप से सम्बोधित करने में देशों को प्रोत्साहित करेगा। जहाँ सिन्धु जल की भागीदारी में भारत-पाक सहयोग इन तर्कों को मजबूती प्रदान करे तथा दक्षेस के रूप में संस्थानीय यंत्राण मौजूद हो वहाँ मानव विकास और सुरक्षा की चुनौतियों से निपटने के लिए पहल को अभी मूर्त्त रूप देना है।

इस दुर्भाग्यपूर्ण विगत अनुभव से निष्कर्ष निकालना, तथापि, त्रुटिपूर्ण होगा कि दक्षिण एशिया में कोई रणनीतिक तालमेल नहीं हो सकता है। यह क्षेत्रा एक प्राकृतिक रणनीतिक इकाई है जो उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में हिन्द महासागर से घिरी हुई है। तथापि, इस क्षेत्रा के देशों ने प्राय: निरस्त्रीकरण के प्रश्नों के प्रति उनके अभिगमों को समन्वित किया। निरस्त्रीकरण में संयुक्त राष्ट्र अथवा कहीं अन्य जगह पर रासायनिक और परमाणु अस्त्रा शामिल हैं। १९७० के दशक में, उन्होंने एक शान्तिपूर्ण क्षेत्रा के रूप में हिन्द महासागर पर प्रस्ताव के कुछ प्रमुख पहलुओं पर मजबूत समझौता किया है। इसके अतिरिक्त, दक्षिण एशियाई देशों के बीच, यदि समय-समय पर कार्यान्वयन में उत्तेजनाओं और आशंकाओं की ओर ध्यान न दिया जाए, तो द्विपक्षीय सुरक्षा प्रबन्धन, अवबोधन

और मूर्त्त सहयोग के क्षेत्रा हैं। दक्षिण एशिया के रणनीतिक तालमेल में एकमात्रा गंभीर दुविधा भारत-पाकिस्तान संघर्ष की है जो अधिक गंभीर आयामों में विघटित हुई प्रतीत होती है जब पाकिस्तान में सेना राजनीतिक रूप से स्वाग्रही हो।

२५.७ कुछ उपयोगी पुस्तकें

इतेख़ारुज़मन (सं.), (१९९७), *रीज़नल इकोनॉमिक ट्रेण्ड्स एण्ड साउथ एशियन सिक्योरिटी*,मनोहर, न्यू दिल्ली।

ए. आर. देव, (१९९१), *साउथ एशियन नेबर्स,* वर्ल्ड फोकस, वोल्यूम १२, नं. ११-१२

ए. सिंह, (१९९७), *दि मिलिटरी बेलेन्स: १९८५-१९९४,* एसीडीआईएस, ऑकेज़नल पेपर्स, यूनिवर्सिटी ऑफ इलिनॉइज़, अरबाना-कैम्पेन: यूआईपी।

कोहेन, स्टेफन पी. (सं.), (१९८७), *दि सिक्योरिटी ऑफ साउथ एशिया: अमेरिकन एण्ड एशियन पर्सपेक्टिव्स,* विस्टार: न्यू दिल्ली।

२५.८ बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न १

१) सत्ता और संसाधनों में असममिति संतति के संदेह और अविश्वास को प्रभावित करती है। यह क्षेत्रा के देशों द्वारा विविध रणनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उत्तरदायी है।

२) कट्टरपंथी राज्य के उदय से प्रजातीय और धार्मिक अल्पसंख्यकों का बहिष्कार होता है जिसके परिणामस्वरूप राज्य के भीतर संघर्ष होते हैं। क्षेत्रा के देशों के बीच सामाजिक-सांस्कृतिक अतिव्याप्ति तथा आसन्न और मुक्त सीमाओं के होते हुए, इस प्रकार के अन्त:राज्यीय संघर्षों के अन्तरराज्यीय संघर्षों में बदले जाने की संभावना रहती है।

३) नाभिकीकरण ने क्षेत्रा में विशाल पैमाने पर युद्ध की संभावनाओं को कम कर दिया है परन्तु सीमित परम्परागत युद्धों और राज्य संरक्षित आतंकवाद जो संघर्ष के नए तरीके बन चुके हैं, से नाभिकीय संघर्ष को आरंभ करने अथवा उसका बहिष्कार करने की संभावना है।

बोध प्रश्न २

१) विकास के मुद्दे उस समय सुरक्षा चिन्तन बन जाते हैं जब वे संकटासन्न स्थिति पर पहुँचते हैं, जब वे समाज के नागरिकों के महत्त्वपूर्ण अनुपातों के जीविका अवसरों की अनदेखी करते हैं अथवा उन्हें कम करते हैं तथा जब वे समाज की स्थिरता और एकता को ख़तरा पहुँचाते हैं।

२) गरीबी, अन्याय पर्यावरणीय अपक्षीणन तथा संघर्ष जटिल और संभाव्य तरीकों से अन्तर्क्रिया करते हैं। मरुस्थलीकरण और वन-अपरोपण लोगों को हाशिए पर ले जाता है अथवा विस्थापित करता है जो मानव सुरक्षा मुद्दों के उदाहरण हैं। दूसरी तरफ, संसाधनों के अपक्षय तथा लोगों के विशाल पैमाने पर आवागमन में अन्तरराज्यीय संघर्ष की क्षमता होती है और इसीलिए ये ग़ैर-परम्परागत सुरक्षा ख़तरे हैं।